2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर -

शास्त्री द्वितीय वर्ष
अनिवार्य द्वितीय-पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न:- 'पथिक' काव्य का उद्देश्य स्पष्ट करें।

उत्तर :- कोई भी रचना निरुद्देश्य नहीं होती। किसी रचना का उद्देश्य किसी घटना का वर्णन करना होता है, तो किसी रचना का उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन करना होता है। पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने 'पथिक' काव्य की रचना विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए की है। जिस समय इसकी रचना की गई थी उस समय हमारा देश भारत गुलाम था। देश को गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए कवि ने अपनी रचना 'पथिक' काव्य के द्वारा देश की जनता को क्रान्ति के लिए प्रेरित करना है।

'पथिक' काव्य के माध्यम से कवि ने पाठकों को यह सन्देश देता है कि सब कुछ खोकर भी सर्वप्रथम देश की आजादी हासिल करनी चाहिए। परन्तु हमारा देश विश्व-प्रेम में व्यवधान उपस्थित न करे। जब तक हम अपने घर को व्यवस्थित नहीं कर लेते तब तक दूसरों का सुधार नहीं कर सकते। इसलिए देश में प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह देश का वीर प्रहरी और सिपाही हो। अपने देश की रक्षा करने के बाद ही वह दूसरों की रक्षा कर सकता है। इसके लिए हमें कर्मशील और चरित्रवान होना होगा। पलायनवादी मनोवृति से देश का हित नहीं हो सकेगा।

मुनि ने पथिक को इसी कर्मवाद का पाठ पढ़ाया है और कहा है कि सृष्टि का कोई भी प्राणी बैठकर नहीं खाता
- जग में सचर अचर जितने हैं सारे कर्म-निरत हैं।
पुनि है एक न एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं।

देश के सेवक को कठोर-कर्मी तो होना ही चाहिए उसका हृदय मक्खन के समान कोमल भी होना चाहिए। उसमें नैतिक गुणों की खान होनी चाहिए। उसमें पराक्रम, पौरुष, क्षमा,

सज्जनता इत्यादि सद्गुण होना चाहिए।

त्रिपाठीजी ने 'पथिक' में व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात की माँग की है जिसका दिन-प्रतिदिन अभाव होते जा रहा है। सारी दुनिया बिना विचार किए कम्युनिस्टों के विरोध में शामिल होती जा रही है। गाँधीवाद साम्यवाद को खुलकर चुनौती दे चुका है। 'पथिक' का कवि गाँधीवादी है और गाँधीवाद में ईश्वर की अलौकिक सत्ता को सिर झुकाकर स्वीकार किया गया है। त्रिपाठीजी ने भी इस काव्य के माध्यम से यही सन्देश दिया है कि यह संसार ईश्वर की रचना है।

वर्तमान संसार ने इस अनन्त शक्ति को निराधार कल्पना कहकर टाल दिया है, जिसका भीषण दुष्परिणाम यह हुआ कि संसार के कोने-कोने में युद्ध, दमन, अत्याचार इत्यादि का नग्न नृत्य हो रहा है। कवि त्रिपाठी जी इस भूल के प्रति सावधान होने को कहा है। कवि का यह सन्देश कभी भुलाया नहीं जा सकता। गाँधीवादी विचारधारा को स्थापित करके ही हम विश्व में शान्ति प्रदान कर सकते हैं। अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही हम सभी संसार का कल्याण कर सकते हैं। हिंसा से हिंसा की आग नहीं बुझायी जा सकती। प्रेम, क्षमा, समर्पण इत्यादि से ही देश का कल्याण होने वाला है। यथा -

"रक्त पान करना पशुता है, कायरता है, मनकी"

शत्रु को अपने नैतिक बल से जीतना ही हमारी सबसे बड़ी बुद्धिमानी है। इसके लिए हमें अहिंसा का मार्ग अपनाना ही होगा। 'पथिक' के कवि का यही सन्देश है।

डॉ० देवचरण प्रसाद 17/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड
'निर्मला' उपन्यास
लेखक - मुंशी प्रेमचन्द
शब्दभाषा हिन्दी, अनिवार्य-पत्र

महत्त्वपूर्ण अवतरणों की व्याख्या -

"मातृ-प्रेम में कठोरता होती थी, लेकिन मृदुलता से मिली हुई। इस प्रेम में करुणा थी, पर वह कठोरता न थी, जो आत्मीयता का गुप्त सन्देश देती है। स्वस्थ अंग की परवाह कौन करता है? लेकिन वह अंग जब किसी वेदना से टपकने लगता है, तो उसे ठेस और धक्के से बचाने का यत्न किया जाता है।"

उत्तर:-

सन्दर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई है। इसके लेखक हिन्दी उपन्यास के सम्राट मुंशी प्रेम चन्द जी हैं। ननद रुक्मिणी और निर्मला के झगड़ों से घर की शान्ति भंग हो जाती है। सियाराम के प्रति रुक्मिणी के उलाहनों को सुनकर मुंशी तोताराम उसकी बुरी तरह पिटाई कर देते हैं। निर्मला से यह नहीं देखा जाता है। वह सियाराम को गोद में लेकर अपने घर में आ जाती है और उसे चुप कराने लगती है। इसी सन्दर्भ में लेखक मातृ-प्रेम और आत्मीयता के अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

रुक्मिणी की शिकायत पर मुंशी तोताराम सियाराम की बुरी तरह पिटाई कर देता है। निर्मला बच्चे के रोने से विकल हो जाती है और उसे गोद में उठाकर अपने कमरे में ले आती है। सियाराम सिसक-सिसक कर रो रहा था। निर्मला की गोद में उसे वात्सल्य न मिलकर दया मात्र मिल रही थी। वह उस दया को भिक्षा मात्र समझ रहा था। परन्तु माँ में मृदुलता कठोरता के साथ मिली होती है। निर्मला सियाराम को लेकर जो पुचकार रही थी, उसमें सियाराम की करुणा और आत्मीयता का संदेश मिल रहा था। उसमें माँ के वात्सल्य की कठोरता नहीं थी। जैसे जब शरीर का अंग स्वस्थ रहता है, तब उसकी

शेष आगे —

कोई परवाह नहीं करता है। परन्तु जब उस अंग में जब
कोई वेदना उत्पन्न हो जाती है, तभी उसे ठेस और धक्के
से बचाने का प्रयास किया जाता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 17/12/20
रा० कृ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ